भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)
दैनिक जागरण
Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)
दिनांक : 01.02.2019

अतीत की ऊर्जा से रोशन होगा आइआइटी

जागरण संवाददाता, वाराणसी : महामना की बगिया बीएचयू में स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान अतीत की ऊर्जा से भी रोशन होगा। इसके लिए 1930 में स्थापित चिमनी का अब कायाकल्प किया जाएगा, जिससे कभी बिजली बनती थी और आधा शहर रोशन होता था। हालांकि 1985 में वह चिमनी टूट गई, जिसके कारण उसी समय से बंद पड़ी है। चेन्नई से दो ट्रक में नई चिमनी का ढांचा यहां आया है।

बनारस एलुमनाई एसोसिएशन के चेयरमैन प्रो. रामजी अग्रवाल ने बताया कि मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के पीछे 1930 में ही करीब 30 मीटर ऊंची एक चिमनी स्थापित हुई। इससे विद्युत उत्पादन होता था। इससे आधे शहर को बिजली प्रदान की जाती थी। साथ ही आइटी के छात्र इस पर अध्ययन करते थे कि बिजली कैसे पैदा होती है। साथ ही इससे सीखते भी थे। उस समय आइआइटी को बेंको (बनारस इंजीनियरिंग कालेज) कहा जाता था। 1985 में चिमनी का ऊपरी हिस्सा टूट गया। उस चिमनी से प्रेरणा लेते हुए 1982 बैच के एलुमनाई व चेन्नई निवासी पी रामचंद्रन बेंको से भी काफी प्रभावित हुए। उन्होंने बेंको के नाम से ही देश-विदेशों में चिमनी व फरनेस (बिजली की भट्ठी) बनाने का बिजनेस शुरू किया। अब वे आइआइटी को भी नई चिमनी दिए हैं। उनकी कंपनी द्वारा बनाई गई चिमनी के उपकरण व कुछ इंजीनियर यहां पहुंच गए हैं। जल्द ही नई चिमनी लगा दी जाएगी। प्रो. अग्रवाल ने बताया कि इस चिमनी में सोलर पैनल लगाया जाएगा, जिससे ऊर्जा उत्पन्न होगी। साथ ही उसपर सायरन भी लगाया जाएगा। ताकि विशेष परिस्थिति में लोगों को सचेत किया जा सके।

आइआइटी, बीएचयू में चेन्नई से ट्रक पर लाई गई नई चिमनी ● जागरण

बदलाव

- 1930 में स्थापित चिमनी से पैदा होती थी बिजली, रोशन होता था शहर
- अब चिमनी का होगा कायाकल्प चेन्नई से ट्रक में आया नया ढांचा